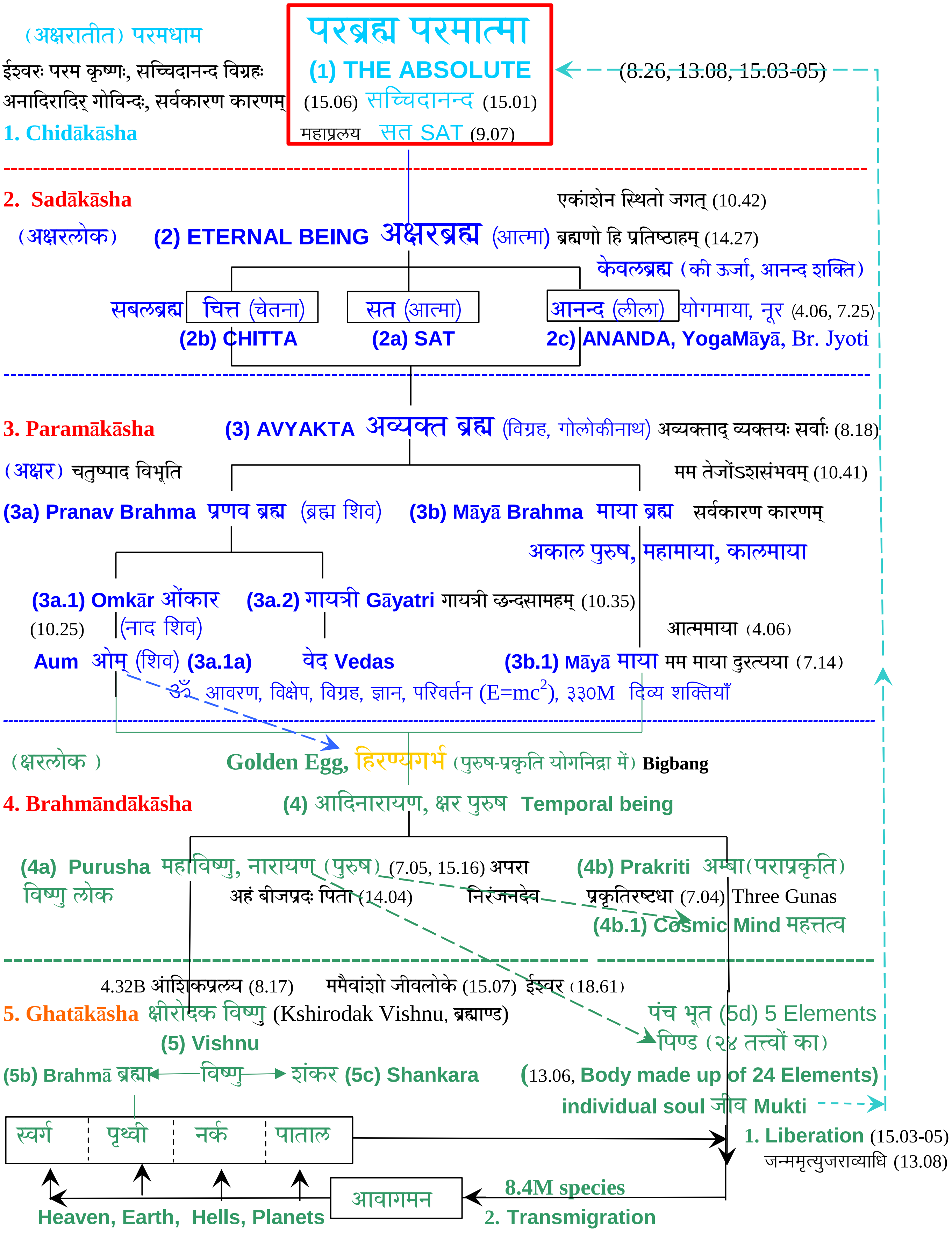

Notes: Numbers in black inside brackets refer to verse nos. in the Gita (download: www.gita-society.com/genesis.pdf)

अहं सर्वस्य प्रभवो (**10.08**), मत्तः परतरं नान्यत् (**7.07), वासुदेवः सर्वम् इति (7.19), 15.12-15; (9.19,11.37,13.12, 15.18)**

न हि ज्ञानेन सदृशं (**4.38**), ददामि बुद्धियोगं तं **(10.10, 18.55)**, जीव=प्र+पु **(13.21)** **both all3 none above2**

परमपिता परमात्मा का अवरोहण

नोट– निम्न व्याख्या केवल उन प्रबुद्ध पाठकों के लिए है जिन्होंने गीता के अध्ययन में कुछ वर्ष लगाए हैं. पाठक-गण निम्न लिखित वैश्विक व्यवस्था को श्रेणी-क्रम (Hierarchy of Cosmic Control) से अंकित करते हुए रेखाचित्र को देखने के लिए कृपया website: www.gita-society.com/section2/genesis.pdf पर जाएं. कोष्ठक के अन्दरवाले अंकों को website के रेखाचित्र में देखें.

वैदिक सृष्टि-शास्त्र में आकाश (Cosmic Space) पांच प्रमुख क्षेत्रों में विभाजित है– (१) चिदाकाश, (२) सदाकाश, (३) परमाकाश, (४) ब्रह्माण्डाकाश, और (५) घटाकाश.

(१) चिदाकाश

परब्रह्म परमात्मा (1) का निवास, परमधाम (गीता १५.०६); सर्वोपरि स्थान, चिदाकाश, में स्थित है. यहां श्रीकृष्ण परमात्मा, परमप्रभु, परब्रह्म, पुरुषोत्तम, सच्चिदानन्द, पिता, परमेश्वर आदि विभिन्न नामों से जाने जाते हैं.

(२) सदाकाश

अक्षरब्रह्म (2) सदाकाश में परब्रह्म परमात्मा की सत् प्रकृति का विस्तार है, जैसा कि गीता १०.४२ और १४.२७ में बताया गया है. गीता के श्लोक ८.०३ और १५.१६ में उल्लिखित अक्षरब्रह्म के तीन प्रमुख विस्तार (या पाद) ये हैं – सत् (2a), सबलब्रह्म या चित्त (2b), और आनन्द (2c) अथवा केवलब्रह्म. सत् स्वभाव को आत्मा या परमेश्वर भी कहा गया है. चित्त स्वभाव के और भी विभिन्न नाम हैं, जैसे – चैतन्यब्रह्म, परमशिव और परात्मा. केवलब्रह्म की ऊर्जा, आनन्द, को गीता के श्लोक ४.०६ और ७.२५ में योगमाया भी कहा गया है.

(३) परमाकाश

चित्त (2b) और आनन्द (2c) प्रकृतियां परमाकाश में चतुर्थपाद, अव्यक्त अक्षरब्रह्म या अव्यक्तब्रह्म (3), के अवरोहण हेतु संयुज्य होती हैं. इसे कई नामों से जाना जाता है– जैसे अनिर्वचनीय ब्रह्म, अव्यक्त, आदिपुरुष, आदिप्रकृति, प्रधान, विग्रह और सर्वकारण-कारणम्. अव्यक्तब्रह्म, जो परब्रह्म (परमात्मा) का लघु अंश मात्र है, अनन्त ब्रह्माण्ड में विस्तार पाता है, जैसा कि गीता ८.१८ और १०.४१ में कहा गया है. परमाकाश योगमाया की प्रमुख शक्तियों–आवरण शक्ति, विक्षेप शक्ति, विग्रह शक्ति, ब्रह्मविद्या शक्ति, प्रज्ञा, कर्म तथा ऊर्जा को पदार्थ और पदार्थ को ऊर्जा में परिवर्तन करने की शक्ति आदि– का भी आवास है.

भगवान् कृष्ण परमाकाश में गोलोकीनाथ के रूप में जाने जाते हैं. गोलोकीनाथ अर्थात् अव्यक्तब्रह्म के दो प्रमुख विस्तरण हैं– ब्रह्मशिव या प्रणव-ब्रह्म (3a) और मायाब्रह्म (3b). प्रणवब्रह्म नादशिव या ओंकार (3a.1) में विस्तार पाते हैं, और ओंकार शिव या ओम् (3a.1a) में (गीता १०.२५). प्रणवब्रह्म का अवरोहण गायत्री (3a.2) (गीता १०.३५) में भी होता है, जो वेदों का आवास है (गीता ७.०८).

मायाब्रह्म परमाकाश में योगमाया का प्रतिबिम्ब है. यह अन्य क्रमिक परिवर्तित रूपों – जैसे महामाया, कालमाया और माया (3b.1) (गीता ७.१४) – में भी अवतरित होता है.

(४) ब्रह्माण्डाकाश

माया अपनी सर्जनात्मक ऊर्जा शक्ति के अल्पांश से ब्रह्माण्डा-काश का निर्माण करती है. ब्रह्माण्डाकाश में माया देवी हिरण्यगर्भ (Golden Egg) का भी निर्माण करती है. आदिनारायण (अथवा आदि पुरुष (4), क्षर पुरुष, शम्भू , महादेव) और महादेवी (अथवा आदि प्रकृति, मां, अम्बा) हिरण्यगर्भ में एक महाकल्प या 311 Trillion solar years तक योगनिद्रा में रहते हैं (गीता ६.०७). ओम् का ब्रह्मनाद हिरण्यगर्भ को सक्रिय अर्थात् जाग्रत् कर महाविष्णु – जो पुरुष (4a) या नारायण, (गीता ७.०५, १५.१६) नाम से भी जाने जाते हैं – और अम्बा या प्रकृति (4b) (गीता ७.०४) का उद्‌भव करता है. प्रकृति के तीन गुण हैं. (अध्याय १४ भी देखें.) प्रकृति के इन तीन गुणों का समुच्चय महत्तत्व, तन्नमात्रा अथवा महत् (4b.1) भी कहलाता है. महाविष्णु अपनी श्वँास-शक्ति से घटाकाश में अनन्त ब्रह्माण्ड (Cosmic Eggs) की उत्पत्ति करते हैं.

(५) घटाकाश

घटाकाश (अथवा विष्णुलोक) में ब्रह्माण्डाकाश के नारायण या महाविष्णु विष्णु (5) के रुप में प्रकट होते हैं, जहाँ उनको क्षिरोदक-विष्णु भी कहा जाता है और वे अपनी भूमिका का विस्तार ब्रह्मा (5b) और शंकर (5c) के रूप में करते हैं. ब्रह्मा सात स्वर्गों, सात पातालों, जम्बूद्वीपों, धरा और अन्य नारकीय नक्षत्रों का सृजन करते हैं. आंशिक-प्रलय-काल (एक कल्प = 4.32 Billion years, गीता ८.१७) में ब्रह्मा की समस्त सृष्टि क्षिरोदक विष्णु के उदर में समाहित रहती है. नारायण अपना विस्तार निरंजन देव और ईश्वर के रूप में भी करते हैं. निरंजनदेव महत्तत्व को सक्रिय कर पंचभूतों (5d) – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश – का निर्माण करते हैं. (गीता ७.०४ भी देखें.)

पंचभूत विस्तृत होकर २४ तत्त्वों (गीता १३.०६ में व्याख्या देखें.) के बने हुए पिण्ड में परिवर्तित हो जाते हैं. पिण्ड से जीवों के पार्थिव शरीरों की रचना पृथ्वी पर की जाती है, जब नारायण अपनी जीवन-शक्ति का बीज (श्लोक ७.१०, १०.३६ और १४.०४ भी देखें) पिण्ड में प्रस्थापित करते हैं और ईश्वर के रूपमें समस्त जीवों के अन्तःकरण में निवास करते हैं. (१५.०७ और १८.६१ भी देखें.) जीव जब तक माया द्वारा निर्मित अज्ञान के पर्दे के कारण शारीरिक धारणा में रहता है तब तक पृथ्वी पर चौरासी लाख योनियों मे आवागमन करता रहता है. जीव उस समय मोक्ष प्राप्त करता है जब उसे अपने अच्छे कर्मों या भगवत्-कृपा से किसी सद्‌गुरु या गीता द्वारा ज्ञान की प्राप्ति होती है और यह अनुभव कर लेता है कि वह पार्थिव शरीर या कर्ता नहीं है, वरन् परमात्मा का दैवी माध्यम और अभिन्न अंग, आत्मा, है.

ब्रह्माण्डाकाश और घटाकाश में हर वस्तु क्षर कहलाती है. सदाकाश और परमाकाश में हर वस्तु अक्षर (अविनाशी, शाश्वत) कहलाती है. परमात्मा को क्षर और अक्षर दोनों से परे, गीता के श्लोक १५.१८ में, अक्षरातीत कहा गया है.

Reference: Fourth Revised Hindi Edition of the Gita
Published by Motilal Banarsidass of New Delhi